

جولائی ۲۰۰۷ء

شعاع حسن

قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى
قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ
يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ

ماہنامہ



مؤسسہ نور ہدایت حسینیہ غفران مآب لکھنؤ

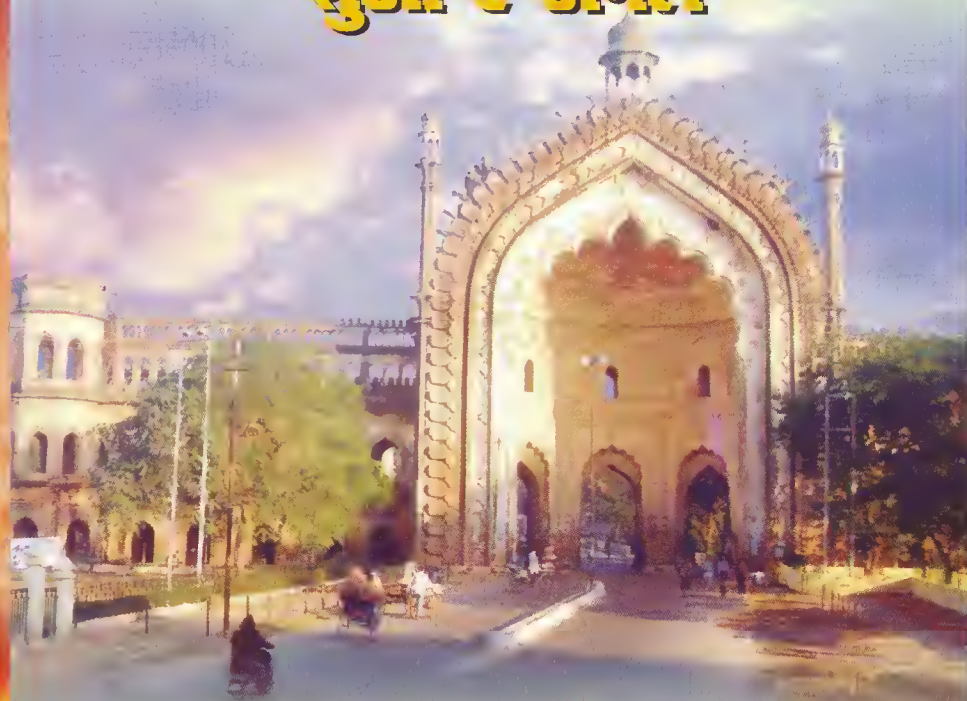
R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07

Monthly

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल



हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका
लखनऊ



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufuran Maab, Chowk
LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA
Phone : 2252230

वर्ष—3

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक 1

माह जुलाई — 2006 लखनऊ
नूर—ए—हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
“लखनऊ”

संरक्षक

मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहिब

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी ‘असीफ़’ जायसी

उप—सम्पादक

हैदर अली

कार्यकारिणी बोर्ड

प्रोफेसर सै. हुसैन कमालुद्दीन अकबर, मु0 र0 आबिद,
सैय्यद समीउल हसन वसीम, शबीब अकबर नक़वी

मिलने का पता

नूर—ए—हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ — 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522—2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ—ए—अमल (उर्दू, हिन्दी) निजामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर—ए—हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ—3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी ‘असीफ़ जायसी’।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

| न० | मज़मून | लेखक | पेज न० |
|----|---|------|--------|
| 1- | हज़रत फातिमा ज़हरा (अ०) की मिसाली ज़िन्दगी | | |
| | इमादुल उलमा अल्लामा सैय्यद अली मुहम्मद नक़वी साहब क़िब्ला | | 3 |
| 2- | मशवरे की अहमियत इस्लामी नुक़त-ए-नज़र से | | |
| | इमादुल उलमा अल्लामा सैय्यद मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला | | 8 |
| 3- | हज़रत फातिमा ज़हरा (स०) इबादत व रियाज़त का बेमिसाल नमूना | | |
| | हाफ़िज़ मौलाना सैय्यद ख़ुशीद अली रिज़वी | | 10 |
| 4- | इस्लाम में शादी के ऊँचे मक़सद | | |
| | हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान | | 13 |
| 5- | मुख्य समाचार | | |
| | इदारा | | 15 |

अक़्वाले मासूम-ए-कौनैन (स०)

- ☐ वह औरत जो अपने शौहर को तकलीफ़ दे ख़ूदावन्दे आलम उसके नेक कामों को भी क़बूल न करेगा।
- ☐ ईमान और हया का चोली-दामन का साथ है। अगर इन में से एक चला जाए तो दूसरा बाक़ी न रह सकेगा।
- ☐ जिसने अपनी ज़िन्दगी उन कामों में गुज़ारी जो ख़ूदावन्दे आलम से दूरी की वजह हों तो उसने अपना नुक़सान किया।
- ☐ जो औरत पाबन्दे नमाज़ हो और बग़ैर शौहर की इजाज़त के घर से बाहर क़दम न निकाले और उसकी फरमाँबरदार है, ख़ूदावन्दे आलम उसके गुनाहों को माफ़ कर देगा।

हज़रत फातिमा ज़हरा स० की मिसाली ज़िन्दगी

इमादुल उलमा अल्लामा सै० अली मुहम्मद नक़वी साहब क़िब्ला

इस्लाम के आगमन से पहले अरब में औरतों के साथ जो रवैया अपनाया जाता था उससे तारीख़ी सफ़हात भरे पड़े हैं। अरबों में यह ख़याल आम था कि औरत से माँ, बाप, क़ौम, क़बीला वालों को कोई फ़ाएदा नहीं पहुँच सकता बल्कि नुक़सान ही नुक़सान पहुँचता है। जैसे उनके नज़दीक औरत सिर्फ़ बेकार और जान का अज़ाब थी। अरबों का यही ख़याल कभी उनसे बच्चियों को ज़िन्दा दफन कराता था, कभी कमसिन लड़कियों को क़त्ल करवाता था और यही ख़याल अरबों को औरतों की बेहुरमती करने पर आमादा करता था।

इस्लाम ने अरबों की और दूसरी बेजा हरकतों के साथ इसकी भी रद की और इस ख़याल की जड़ें उनके ज़हन से काटीं।

रसूल (स०) ने अपने अक़वाल से और कुर्आन ने अपनी आयात से औरतों के मरतबे पर रोशनी डाली और वह जिस मरतबे की हक़दार थीं वह मरतबा इस्लामी शरीअत में दिलवाया लेकिन खुदा के अहक़ाम और रसूल के अक़वाल के साथ-साथ किसी ऐसी अमली मिसाल की भी ज़रूरत थी जिसे अम इन्सान नमूना बना सकते और जिसके नक़शे क़दम पर चल कर मन्ज़िले मक़सूद तक पहुँच सकते।

मर्दों और औरतों दोनों के लिए एक-एक नमूने की ज़रूरत थी। मर्दों के लिए एक ऐसा नमूना होना चाहिए था जो बताए कि वह औरतों के साथ किस तरह का बर्ताव करें और औरतों के लिए मिसाल की ज़रूरत थी कि वह माँ, बाप, शौहर, भाई, बेटों के साथ किस-किस तरह से पेश आएँ और अपनी ज़िन्दगी को क्या शक़ल दें। इन दोनों ज़रूरतों का ख़याल रखते हुए हकीमे मुतलक़ परवरदिगारे आलम ने हज़रत फातिमा ज़हरा (स०) को रसूल इस्लाम (स०) की आगोश में भेजा कि अगर मर्दों को नमूने की ज़रूरत हो तो पैग़म्बर का किरदार सामने रख लें और अगर औरतों को रहनुमा की ज़रूरत हो तो फातिमा ज़हरा (स०) को पेशे नज़र रखें।

अगर जनाबे फातिमा (स०) की सीरत पर नज़र डाली जाए तो सबसे पहले खुदा की इबादत और रसूल (स०) की इताअत सामने आती है, बाप की इताअत का आलम यह है कि एक बार फातिमा (स०) ने हार पहना, यह कोई बुरी बात नहीं है मगर जब पैग़म्बरे खुदा (स०) ज़हरा (स०) के घर तशरीफ़ लाए तो उस हार को देखकर ख़ामोश से हो गए। बस रसूल (स०) की ख़ामोशी का मतलब समझदार बेटी समझ गई और वह हार भी खुदा की राह में दे दिया, जब रसूल (स०)

को इसका इल्म हुआ ते रिवायात में है कि तीन बार हज़रत ने इरशाद फरमाया:

“वही किया जो मैं चाहता था”

रसूल (स0) की इताअत का इससे बढ़कर सुबूत क्या हो सकता है कि न कोई रसमी हुक्म था न ज़ाहरी ख़्वाहिश, बस रसूल (स0) ने थोड़ी सी ख़ामोशी अख़्तियार कर ली थी मगर रसूल को समझने वाली सैय्यदा (स0) ने उस ख़ामोशी के पर्दे के पीछे छुपे हुए मानी समझ गई और बाप के दिल की छुपी हुई आरजू को पूरा कर दिया जिस वजह से बेसाख़्ता रहनुमाए इस्लाम (स0) को कहना ही पड़ा कि “सैय्यदा ने वही किया जा मैं चाहता था।”

सिर्फ यही नहीं बल्कि ज़िन्दगी के हर-हर मोड़ पर सैय्यदा वही करती रहीं जो रसूल (स0) चाहते थे। बाप को मुश्रिकीने कुरैश लहूलहान करते रहे मगर सैय्यदा सब्र करती रहीं चूँकि रसूल (स0) की यही ख़ाहिश थी। रसूल (स0) को मक्का छोड़ना पड़ा मगर सैय्यदा राज़ी बरिज़ा रहीं। हिजरत की रात जब रसूल (स0) अली (अ0) को अपने बिस्तर पर छोड़कर जा रहे थे अगर फातिमा (स0) गिरया ही करने लगतीं तो यकीनन बना बनाया काम बिगड़ जाता चूँकि कुफ़्फ़ार हकीक़त को जान लेते कि रसूल (स0) तश्रीफ़ लिये जा रहे हैं मगर बावजूद कमसिनी के सैय्यदा ख़ामोश रहीं क्योंकि रसूल (स0) यही चाहते थे।

रात भर तलवारों और तीरों की चमक लचक और झन्कार के बीच रहीं मगर उफ़ न की। हालाँकि उस वक़्त सिर्फ़ आठ साल की उम्र थी इस वजह से कि यही बाप की ख़ाहिश थी

फिर रसूल (स0) ने आपके लिए जो शौहर चुना वह ऐसा जिसके बारे में मदीने की औरतें चर्चा करती रहती थीं कि उसके पास दुनिया का माल बिलकुल नहीं, मगर बाप से उसके बारे में जो-जो फ़ज़ाएल सुने थे उसकी बिना पर सैय्यदा ख़ामोश रहीं। इसलिए कि अपने बाप की मरज़ी ऐन उनकी ही मरज़ी थी।

फिर शौहर जंगों में ज़ख्मी होते रहे, सैय्यदा ख़ामोश रहीं। इस वजह से कि उन सब में बाप की खुशी छुपी थी। ग़र्ज़ कि ऐसा कोई मौक़ा नहीं जब बाप की इताअत न की हो और वह न किया हो जो रसूल (स0) चाहते थे तब ही तो पैग़म्बरे इस्लाम (स0) कहने के लिए मजबूर हो गए कि: “अहब्बु अहली इलैइय्या फातिमता”

“मुझे अपने अहलेबैत में सबसे ज़्यादा फातिमा (स0) से मुहब्बत है।”

बाप की इताअत ही की तरह शौहर के अहक़ाम की पाबन्दी भी सीरते फातिमा (स0) में अहम मक़ाम रखती है। तारीख़ में कोई ऐसा मक़ाम नहीं मिलता जब जनाबे अमीर (अ0) जनाबे ज़हरा (स0) से नाराज़ हो गए हों। जनाबे अमीर (अ0) और फातिमा ज़हरा (स0) के ताल्लुकात शादीशुदा ज़िन्दगी का रौशन बाब हैं।

हर माँ को अपनी औलाद से लाड-प्यार और मुहब्बत होती है। जनाबे सैय्यदा (स0) को भी अपने बच्चों से मुहब्बत थी क्यों न होती, रसूल (स0) बता चुके थे कि सैय्यदा (स0)! तुम्हारे दोनों बच्चे इमाम होंगे।

मगर जब इस्लाम का सवाल आ जाता था तो बच्चों की मुहब्बत इसके आगे कोई हैसियत

नहीं रखती थी। यही वह विरसा था जो माँ से सानिये ज़हरा हज़रत ज़ैनब (अ0) को मिला था कि मज़हब पर सब कुछ कुर्बान, चाहे औलाद हो चाहे भाँजे भतीजे हों और चाहे खुद अपनी ज़ात।

जनाबे ज़हरा (स0) की सीरत में शानो शौकत को बिलकुल दखल न था एक लम्बे अरसे तक फातिमा (स0) खुद ही घर का काम करती रहीं। चक्की चलाती थीं, आटा पीसती थीं, झाड़ू देती थीं, खाना पकाती थीं। गर्ज घरदारी की तमाम ज़रूरतें खुद ही पूरी करती थीं। हालाँकि इन तकलीफों की वजह से हाथों की खाल फट जाती थी। उंगलियाँ लहुलहान हो जाती थीं मगर सब्र व इस्तेक़लाल का यह आलम था कि एक हर्फ़ शिकायत ज़बान पर नहीं आता था बल्कि हमेशा खुदा का शुक्र अदा करती थीं। एक बार बाप से कनीज़ की ख़ाहिश की तो रसूल (स0) एक सवाल कर बैठे। बेटी तुम्हारे लिए कनीज़ ज़्यादा बेहतर है कि एक तस्बीह बता दूँ, जो खुदा को बहुत पसन्द है। इन दोनों चीज़ों में से क्या लोगी.....? फातिमा (स0) ने तस्बीहे ख़ालिक को कनीज़ पर तरजीह दी।

हालाँकि कुछ अरसे बाद रसूल (स0) ने खुद ही एक कनीज़ फ़िज़्ज़ा इनायत कर दी लेकिन उसके साथ-साथ यह हुक्म भी दे दिया कि फ़िज़्ज़ा को ज़्यादा तकलीफ़ न पहुँचने पाए। तुमसे ज़्यादा ज़हमत न बर्दाश्त करना पड़े। फातिमा (स0) ने जिस तरह इरशादे रसूल (स0) पर अमल किया और जो रवैय्या अपनी कनीज़ के साथ अख़्तियार किया वह भी न सिर्फ़ औरतों के लिए बल्कि उन तमाम लोगों के लिए जिनका

कोई मातहत हो नमूने की हैसियत रखता है। फातिमा (स0) एक दिन खुद खाना पकाती थीं और घर का काम करती थीं और कनीज़ फ़िज़्ज़ा बैठकर खाती थीं और एक दिन कनीज़ पकाती थी फातिमा (स0) खाती थीं और फिर सादगी और शान व शौकत के बचने की सबसे रौशन मिसाल फातिमा ज़हरा (स0) की शादी है जिसमें न हाथी हैं न घोड़े, न आँखों को चकाचौंध कर देने वाला माहोल और पुरतकल्लुफ़ लिबास न शाहाना दहेज़। बस रसूल (स0) हैं, चन्द अस्हाब हैं, फटे-पुराने लिबास में दुल्हा है, सादे कपड़ों में पर्दे के पीछे दुल्हन है दहेज़ में कुछ मिट्टी के बर्तन हैं और कुछ ज़िन्दगी की ज़रूरत की चीज़ें हैं। टूटा-फूटा मकान है और बस। यह है शहंशाहे अरब की दुख़्तरे नेक अख़तर की शादी।

अगर फातिमा (स0) की शादी के नमूने पर मुसलमान अमल करें तो बहुत सी बेकार रिवायात की जंजीरें पिघल जाएँ।

फातिमा ज़हरा (स0) की सीरत में सबसे ज़्यादा अहमियत पर्दे की है यह सीरते फातिमा (स0) का इन्तिहाई रौशन बाब है।

ज़मान-ए-रसूल में शुरु से फातिमा (स0) ही वह ख़ातून थीं जो बुर्का व चादर में रहते हुए भी नहीं निकलती थीं। हालाँकि अली-ए-मुर्तज़ा (अ0) का मकान मस्जिदे नबवी से बिलकुल मिला हुआ था बल्कि उसी में था। रसूल (स0) ने तमाम अस्हाब के दरवाज़े जो मस्जिद में खुलते थे बन्द करवा दिये थे, सिर्फ़ जनाबे अमीर (अ0) का दरवाज़ा खुलता रहा, फिर भी फातिमा (स0) कभी अपने बाप के पीछे नमाज़ पढ़ने नहीं गयीं न कभी

खुत्बा सुनने के लिए तशरीफ ले गयीं। हालाँकि रसूलुल्लाह (स0) का खुत्बा सुनने का शौक इतना था कि जब बड़े साहबजादे हसन मुजतबा (अ0) खुत्बा सुनकर वापस आते थे तो फातिमा (स0) उनसे अपने बाप के खुत्बे का मज़मून सुन लिया करती थीं। फिर भी यह पर्दादारी का लिहाज़ ही था जो इस “शौक” के बढ़ते हुए सैलाब को चट्टान बनकर रोके हुए था और जिसने फातिमा (स0) को रसूल (स0) का खुत्बा सुनने से बाज़ रखा था।

एक बार रसूल (स0) ने अपने अस्थाब से खुत्बे के बीच सवाल किया कि बताओ! औरत के लिए सबसे अच्छी बात क्या है?

सब ख़ामोश रह गए। जब जनाबे फातिमा (स0) को ख़बर पहुँची तो उन्होंने कहलाया कि औरत के लिए सबसे अच्छी चीज़ यही है कि न उसकी नज़र किसी ग़ैर मर्द पर पड़े और न किसी ग़ैर मर्द की नज़र उस पर। जब रसूल (स0) तक यह जवाब पहुँचा तो बहुत खुश हुए और फरमाया कि क्यों न हो, फातिमा (स0) मेरा ही तो एक जुज़ है।

फातिमा को पर्दे का जितना ख़याल था उसका अन्दाज़ा इससे भी हो सकता है कि जब रसूल (स0) की आँखें बन्द हो गयीं और दुश्मनाने अहलेबैत (अ0) ने अली (अ0) व फातिमा (स0) को तरह-तरह की तकलीफें पहुँचाना शुरू कर दीं जिनकी वजह से घुल-घुल कर फातिमा (स0) मुसलसल क़ब्र की मन्ज़िल से क़रीब हो रही थीं उस ज़माने में अस्मा बन्ते उमैस बयान फरमाती हैं कि एक दिन मैंने फातिमा (स0) को बहुत फ़िक्रमन्द देखा, जब उसका सबब उनसे पूछा तो

जनाबे सैय्यदा ने जवाब दिया कि मैं सोच रही हूँ कि अरब में औरतों का जनाज़ा उठाने का जो दस्तूर है, उसमें औरतों के क़दो कामत पर मर्दों की नज़र पड़ती है। मेरा भी जनाज़ा इसी तरह उठेगा। अस्मा का बयान है कि मैंने कहा कि बीबी जिस ज़माने में मैं हबश में थी उस वक़्त वहाँ एक किस्म का सन्दूकनुमा जनाज़ा देखा था जिसमें यह ख़राबी नहीं है और फिर अस्मा ने लकड़ी⁽¹⁾ मंगाकर सन्दूक की शक्ल बना दी। जनाबे फातिमा (स0) इस शक्ल को देखकर इतना खुश हुईं कि उन्होंने कहा: “अस्मा तुमने मेरा पर्दा रखा है खुदा तुम्हारा पर्दा रखेगा।” और वफाते रसूल (स0) के बाद पहली बार फातिमा (स0) के लबों पर मुस्कुराहट नज़र आयी और उन्होंने वसियत फरमाई कि मेरा जनाज़ा ऐसे ही सन्दूक में रात के अंधेरे में उठाया जाए जिस पर अमल किया गया और फातिमा (स0) का जनाज़ा दुनियाए इस्लाम का पहला जनाज़ा था जो इस तरह उठाया गया। मगर एक बार फातिमा (स0) ने अपनी इस तरह की पर्दादारी की राहें खुदा में कुर्बानी भी पेश की थी और वह मुबाहला का मौक़ा था। वह फातिमा (स0) जो कभी हुजरे से निकलकर मस्जिद में भी नहीं आई थीं। बस बुर्के और चादर में पोशीदा होकर पूरा शहर तैय करके जंगल में नसारा से रुहानी मुक़ाबले के लिए चली गई थीं चूँकि वह पर्दा भी खुदा और रसूल (स0) की इताअत में था और यह हुक्म भी खुदा और रसूल का था कि मुबाहला की मन्ज़िल में इस मेयार के पर्दे को ख़ैरबाद कहकर सिर्फ़ बुर्के और चादर में पोशीदा होकर चली आयीं। यह सबक भी

जैनब व उम्मेकुल्सूम (अ0) को अपनी माँ ही से मिला था जिसको दुनिया ने शहादते हुसैनी के बाद देख लिया। यह और बात है कि उस वक्त जुल्म के हाथों उनके सरों से चादरें भी छिन चुकी थीं।

बज़ाहिर तो हज़रत फातिमा (स0) ने कोई जिहाद नहीं किया। (चूँकि औरतों पर जिहाद वाजिब नहीं है) मगर उनकी पूरी ज़िन्दगी खुदा के रास्ते में जिहाद है। जो यकीनन उस जिहाद से बहुत ज़्यादा काबिले क़द्र है जो तलवार हाथ में लेकर मैदाने जंग में किया जाता है। चन्द ही ऐसे पाक नफ़्स खुदा के बन्दे हुए हैं जो इस कूचे में क़दम रख सके हैं।

हज़रत फातिमा की सीरत की यही वह हसीन मोड़ थे जिनकी वजह से रसूल (स0) बावजूद बाप होने के उनकी इज़ज़त करते थे। तिरमिज़ी ने हज़रत आएशा से रिवायत की है कि जब रसूल (स0) फातिमा को देखते थे तो सर व क़द ताज़ीम को खड़े हो जाते थे। और फातिमा (स0) को लाकर अपनी जगह पर बिठाते थे। रसूल (स0) यह इज़ज़त बाप होने की वजह से नहीं करते थे और न करने का मौक़ा था बल्कि इज़ज़त उन कमालाते फातिमा (स0) की हैसियत से करते थे। ऐसा नहीं है कि रसूल (स0) को फातिमा (स0) से वह मुहब्बत नहीं थी जो एक बाप को बेटी से होती है या उस मुहब्बत का मुज़ाहेरा नहीं हुआ। यह मुज़ाहेरा उस वाक़े से भी होता है कि जब रसूल (स0) किसी जंग पर तशरीफ़ ले जाते तो सबसे बाद में जनाबे सैय्यदा से मुलाक़ात करते थे। और जब आते थे तो सबसे पहले मिलते थे, यह उसी मुहब्बत का मुज़ाहेरा था

जो एक बाप को अपनी बुलन्द मरतबे वाली बेटी से होती है। फातिमा (स0) की सीरत के शक़्ल व सूरत यही थे जिनकी वजह से पैग़म्बरे खुदा (स0) को कहना पड़ा कि फातिमा (स0) मेरा जुज़ है जिसने उसे तकलीफ़ पहुँचायी उसने मुझे तकलीफ़ दी, जिससे वह नाराज़ उससे मैं नाराज़ और जिससे मैं नाराज़ उससे खुदा नाराज़..... मगर रसूल (स0) की वफ़ात के बाद जो-जो तकलीफ़ें मुसलमानों ने फातिमा (स0) ज़हरा को पहुँचायीं वह तसव्वुर से बाहर हैं.....मुसलमानों ने फातिमा (स0) का जाएज़ हक़ फ़िदक छीन लिया। फातिमा (स0) के घर के क़रीब लकड़ियाँ इकट्ठा करके आग लगा दी। यह तो माद़दी तकलीफ़ें थीं इसके अलावा रूहानी तकलीफ़ें भी पहुँचायी गयीं। इससे बढ़कर रूहानी तकलीफ़ क्या हो सकती है कि उस लड़की को जिसके बाप को मुश्रिकीन भी “सादिक़” मानते थे और खुद जिसे खुदा ने “सादिक़ीन” की जमात में शरीके मुबाहला किया। मुसलमानों ने (मआज़ल्लाह) झूठा क़रार दे दिया। मगर यह फातिमा (स0) की सीरत का कारनामा है कि यह कहने के बावजूद कि: “मुझ पर वह मुसीबतें पड़ीं जो अगर दिनों पर पड़तीं तो वह काली रात हो जाते।” कभी मुसलमानों के हक़ में बद्दुआ नहीं की।

हज़रत फातिमा ज़हरा (स0) की ज़िन्दगी वह ज़िन्दगी है जो न सिर्फ़ औरतों के लिए नमूना है या मुसलमानों के लिए चिरागे राह है बल्कि तमाम इन्सानियत के लिए मिसाली हैसियत रखती है।

□□□

मशवरे की अहमियत

इस्लामी नुक्त-ए-नज़र से

इमादुल उलमा अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब किब्ला

इन्सान कितना ही इल्म वाला और तजुर्बेकार हो लेकिन हर वक़्त इसका इमकान है कि उसके फैसले और फ़िक्र में ग़लती हो जाए इसलिए इस्लाम ने इसे ज़रूरी क़रार दिया है कि ऐसे तमाम एक साथ या अकेले होने वाले कामों में जिनमें मशवरे की गुन्जाईश हो आपस में ज़रूर मशवरा किया जाए और ऐसे लोगों से मशवरा किया जाए जो उसकी पूरी क़ाबलियत और सलाहियत रखते हों और अक़ल व समझ और सोच विचार में बड़े मरतबे पर हों। जब किसी मसले को बहुत से लोग फ़िक्र व नज़र के मुख़तलिफ़ अन्दाज़ से देखेंगे तो यकीनन उनसे मिलजुल कर एक ऐसा फैसला उभर कर सामने आ जाएगा जिसमें ग़लती और ख़तरों के इमकानात कम से कम होंगे और अकेले राए बना लेने से जो तबाही के नतीजे सामने आ सकते हैं उनसे बड़ी हद तक बचाव मुमकिन हो सकेगा, आपस में मशवरा करने में जहाँ और फ़ाएदे हैं एक बड़ा फ़ाएदा यह भी है कि इसकी वजह से आपसी ताल्लुक़ात खुशगवार हो जाते हैं, मुहब्बत का रिश्ता और मज़बूत हो जाता है, सच्चाई और इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ में ज़ियादती होती है, हमदर्दी का जज़्बा उभरता है और हर शख़्स की क़द्र दूसरे के दिल में बढ़ जाती है, बस ज़रूरत सबसे ज़्यादा इसी की है कि मशवरा करने में भी सच्चे दिल से काम लिया जाए और मशवरे की नतीजे पर अमल करने और उसकी पाबन्दी करने में भी

पूरी ईमानदारी और सच्चाई का सुबूत दिया जाए क्योंकि बहरहाल मशवरा तो दोस्तों ही से किया जाता है और इस उम्मीद से किया जाता है कि हर फरीक़ पूरी सच्चाई के साथ मशवरा लेने वाले मसाएल को समझने और समझाने की कोशिश करेगा और उस मशवरे के नतीजे का दिल से एहतेराम करेगा। इसलिए जहाँ मशवरे से खुद के फ़ाएदे जुड़े हैं साथ ही हमारी साथ गुज़रने वाली ज़िन्दगी के लिए भी आपसी मशवरे तरक्की, मज़बूती और कामियाबी का बेहतरीन ज़रिया है आपसी मशवरे से ज़हनी और फ़िक्री ताक़तों को नए-नए रास्ते मिलते हैं, उनकी फ़ितरी खूबियाँ सामने आती हैं। मशवरा करने वालों की अमली ताक़त में एक नया और ताज़ा जोश पैदा हो जाता है और वह मज़बूती हासिल होती है जो बिना मशवरे के कभी हासिल नहीं हो सकती इस तरह आपसी मशवरा एक बड़ी नेमत है जिसके सहारे से लोगों और क़ौमों ने तारीख़ में अपने लिए बड़ी जगह पैदा की है और वह ऐसी मज़बूत चट्टान में बदल गए हैं जो हमेशा दुश्मनों के लिए न टूटने वाली साबित हुई। आपसी मशवरे घरेलू ज़िन्दगी की महदूद सतह पर हो या क़ौमी और सूबाई पार्लियामेण्ट के मेयार पर एक साथ और बड़े पैमाने पर हो हर जगह यह मज़बूती, कुव्वत, इत्तेफ़ाक़ व इत्तेहाद, सच्चाई व मुहब्बत, तरक्की और कामियाबी व नजात का ज़बरदस्त सरचश्मा और वसीला है शर्त यह है कि इसकी बुनियादें

ठीक हों और इन्तिहाई सच्चे तरीके पर इस मशोरे को सही नतीजे के हासिल करने का ज़रिया बनाने की कोशिश की जाए इसलिए कि अगर उसे उसके उन बुनियादी हुदूद से हटा दिया जाएगा तो फिर सबसे बड़ा ख़तरा और ख़ौफ़ इस बात का है कि यह मज़बूती का रास्ता बनने के बजाए आपस की फूट और अन्दुरुनी और बाहरी झगड़े का ज़रिया बनकर तबाही व बर्बादी की निशानी बन जाएगी बिल्कुल उसी तरह जैसे हम अपनी ही तलवार से खुदकशी भी कर सकते हैं और दुश्मन से बचाव भी। आपसी मशोरा भी एक हथियार की हैसियत रखता है जिसका सही इस्तेमाल कौमों की इन्फ़ेरादी और इज्तेमाओ ज़िन्दगी के लिए मज़बूती और खुशहाली की ज़मानत है। जबकि उसका ग़लत इस्तेमाल तबाही और रुसवाई का पैग़ाम है।

सूर-ए-आले इमरान में अल्लाह के इस इरशाद में बड़े अहम इशारे हैं जिससे हम अपनी ज़िन्दगी के इस इन्तिहाई ज़रूरी पहलू के लिए बहुत कुछ सीख सकते हैं:-

ऐ रसूल! यह अल्लाह की रहमत ही की वजह से है कि तुम उन लोगों के साथ नर्म रहे और अगर तुम बदमिज़ाज और सख़्त दिल होते तो लोग तुम्हारे पास से भाग गए होते। तो तुम उन लोगों को माफ़ करो और उनके लिए इस्तेग़फ़ार करो और उनसे मामलात में मशोरा करते रहो लेकिन जब उसके बाद तुम पक्का इरादा कर लिया करो तो फिर अल्लाह पर भरोसा रखो बेशक अल्लाह उन लोगों से मुहब्बत रखता है जो उस पर भरोसा रखते हैं। (सूरे आले इमरान : 159)

सूर-ए-शूरा में इस तरह सच्चे ईमान वालों की तारीफ़ फरमाई गई है:-

वह अपने परवरदिगार का हुक्म मानते हैं

और नमाज़ पढ़ते हैं और उनके सारे काम आपस के मशोरे से होते हैं और जो कुछ हमने उन्हें रिज़क़ दिया है उसमें से वह खुदा के रास्ते में खर्च करते हैं। (सूरे शूरा : 38)

सरवरे काएनात (स0) ने इसी वजह से भी इन्तिज़ामी मामलों में असहाबे केराम (रजि0) से मशोरा फरमाया करते थे इसके बावजूद कि आपको किसी से भी मशोरे की ज़रूरत न थी और आपको अल्लाह ने इल्म व फ़िक्र और नुबुवत व रिसालत का वह मरतबा अता किया था जो काएनात में किसी को भी हासिल न था लेकिन इस बात से लोगों की हिम्मत बढ़ती थी और उन तमाम लोगों के लिए यह एक मिसाल बन रही थी जो वाक़ी तोर पर मशोरे के मोहताज होते हैं। लोगों ने आँहज़रत (स0) से पूछा कि अल्लाह ने जो यह फरमाया है कि जब तुम अज़्म कर लो तो फिर खुदा पर भरोसा करो इस 'अज़्म' का क्या मतलब है तो आपने यही फरमाया था कि इससे मुराद यह है कि जब तुम अक़ल व समझ वाले लोगों से मशोरा कर लो तो फिर इस फ़ैसले पर काएम हो जाओ और अल्लाह की ज़ात और उसकी मदद पर भरोसा रखो, एक हदीस में यह भी फरमाया गया है कि जिस शख्स से मशोरा किया जाता है वह अमीन होता है, मक़सद यह है कि राए देना भी एक बड़ी अमानत की अदायगी है और उसमें ख़यानत से काम लेना और मशोरे के सही फाएदे को हवा व हवस और ज़ाती या मुनाफ़िक़ाना ख़यालात की बिना पर नज़रअन्दाज़ करना किसी मुसलमान के लिए जाएज़ नहीं है बल्कि इस काम में इसी अमानत व दयानत और सच्चाई व वफ़ा का अमली सुबूत देना ज़रूरी है जो एक सच्चे मोमिन और तौहीद परस्त का

बक़िया..... पेज 12 पर

हज़रत फातिमा ज़हरा स० इबादत व रियाज़त का बेमिसाल नमूना

हाफिज़ मौलाना सै० खुरशीद अली रिज़वी साहब
फ़ाज़िल जामिआ इमामिया तनज़ीमुल मकातिब, लखनऊ

पैग़म्बरे इस्लाम (स०) ने जनाबे सलमान से फरमाया: ऐ सलमान! खुदावन्दे आलम ने मेरी बेटी फातिमा (स०) के दिल और बदन के हिस्सों को ईमान से भर दिया है और उसके दिल में ईमान इतना उतर गया है कि वह अपने खुदा की इबादत हर चीज़ पर मुक़द्दम रखती है।

(बहारुल अनवार: जि-43 पे-64)

दूसरी जगह पर अपनी लख्तेजिगर के तरीफ में फरमाते हैं:

जब मेरी बेटी फातिमा (स०), मेहराबे इबादत में खुदा के सामने खड़ी होती है तो उसका नूर आसमानी फरिश्तों के लिए ऐसे ही चमकता है जिस तरह ज़मीन वालों के लिए सितारे चमकते हैं। और खुदावन्दे आलम फरिश्तों से ख़िताब करता है: ऐ मेरे फरिश्तों मेरी कनीज़ और मेरी कनीज़ों की सरदार फातिमा (स०) को देखो किस तरह मेरे सामने खड़ी है, उसका बदन मेरे ख़ौफ से काँप रहा है और वह अपने मुकम्मल वजूद के साथ मेरी इबादत में लगी है। तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने उसकी पैरवी करने वालों और शीओं को जहन्नम की आग से अमान दे दी।

(बहारुल अनवार: जि-43 पे-172)

इमामे हसन मुजतबा (अ०) फरमाते हैं: एक जुमे की रात मैंने अपनी माँ को सुबह तक इबादते खुदा में मशगूल पाया। आप बराबर सुबह तक रुकू व सिज्दे करती रहीं और नमाज़ में

मोमिनीन के लिए नाम बनाम दुआए ख़ैर करती रहीं और अपने लिए एक बार भी दुआ नहीं फरमायी। मैंने अर्ज़ की मादरे ग्रामी! आप अपने लिये दुआ क्यों नहीं करती? आप (स०) ने फरमाया: पहले पड़ोसी फिर खुद।

(कश्फुल गुम्मह: जि-2 पे-94)

फातिमा (स०) बेहतरीन बीवी

फातिमा पैग़म्बरे इस्लाम (स०) की बेटी, जिगर का टुकड़ा, आखों का नूर होने के बावजूद दूसरी बावफा बीवियों की तरह अपने शौहर की खिदमत करतीं और घर की तमाम ज़िम्मेदारियाँ निभातीं, बल्कि इस सिलसिले में भी उनकी मिसाल नहीं मिलती।

इमामे सादिक (अ०) फरमाते हैं: पैग़म्बरे इस्लाम (स०) ने घर के कामों को जनाबे फातिमा (स०) के हवाले किया और बाहर के कामों की ज़िम्मेदारी जनाबे अमीर के सुपुर्द की। जनाबे फातिमा (स०) ज़िन्दगी के तमाम खुशी के लम्हे, ग़म, मुसीबतों और दर्द व परेशानियों में अली (अ०) के कन्धे से कन्धा मिलाकर रहीं। फातिमा (स०) ने ग़रीबी और परेशानी के हालात का बड़ी हिम्मत और बर्दाश्त व नमी से मुक़ाबला किया। सिर्फ आप ही अली (अ०) के हमसर थीं और घरदारी में आपकी कोई मिसाल न थी।

(बहारुल अनवार: जि-43 पे-81)

अली (अ०) फरमाते हैं: मैंने कभी कोई

ऐसा काम नहीं किया जिससे जनाबे फातिमा (स0) नाराज़ हों और उन्होंने भी मुझे कभी नाराज़ नहीं किया।⁽¹⁾ एक दूसरी रिवायत में फरमाया: जब मैं घर लौटता था और हज़रत ज़हरा (स0) पर मेरी निगाह पड़ती थी तो मेरी थकावट और तमाम ग़म दूर हो जाते।⁽²⁾ एक मुसलमान ख़ातून को इसी तरह खुश अख़लाकी और मुहब्बत का मुज़ाहेरा करना चाहिए ताकि दिन भर के थके माँदे शौहर को सुकून व हौसला दे सके और दूसरी तरफ़ मर्द भी औरत को कनीज़ न समझे कि घर के सख़्त से सख़्त काम भी कन्धों पर डाल दे और छोटी-छोटी चीज़ों में बुराई निकाले, एतेराज़ करे और बद अख़लाकी से पेश आए।

(1) वाफी, किताबुन्निकाह: पे-114

(2) मनाकिबे ख़वारज़मी: पे-256

फातिमा (स0) ने अपने बुजुर्ग बाप हज़रत रसूले खुदा से रिवायत की है कि आपने फरमाया: तुम में से बेहतरीन मर्द वह हैं जो अपनी बीवियों से बहुत ज़्यादा नेकियों और मुहब्बतों से पेश आते हैं। इसलिए अली (अ0), फातिमा (स0) से सिर्फ़ खुशअख़लाकी ही से पेश नहीं आते थे बल्कि वह उन्हें कभी नाराज़ भी नहीं होने देते थे और घरेलू कामों में हमेशा उनकी मदद करते थे।

इमामे सादिक (अ0) फरमाते हैं कि अमीरुलमोमिनीन (अ0) बाहर से ईंधन, पानी लाते और घर की सफाई करते और जनाबे फातिमा आटा पीसतीं और उसे गूँधकर रोटी पकातीं।

(बहारुल अनवार: जि-43 पे-151)

हज़रते फातिमा ज़हरा (स0) और बच्चों की तरबियत

किताब ज़ख़्राएरुल उक़बा में ज़िक्र हुआ है कि एक दिन बिलाल अज़ान के लिए कुछ देर

से मस्जिद पहुँचे। पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ने पूछा आज देर क्यों हो गई? अर्ज़ की: फातिमा के घर की तरफ से गुज़र रहा था। आप बैठी चक्की चला रही थीं और उनके बच्चे के रोने की आवाज़ आ रही थी। मैंने कहा उनमें से कोई एक काम मुझे दे दीजिये, तो आपने फरमाया अगर मेरी मदद करना चाहते हो तो चक्की चलाओ क्योंकि मैं बच्चे को बेहतर तरीक़े से बहला सकती हूँ। इसी वजह से मस्जिद आने में देर हो गई। हज़रत ने फरमाया : तुमने फातिमा (स0) पर रहम किया खुदावन्दे आलम तुम पर रहम करे।

इस हदीस से पता चलता है कि बच्चों की तरबियत आसान काम नहीं है और यह अहम काम भी औरतों की ज़िम्मेदारी है। बच्चे की तरबियत उसके खाने और कपड़े पर ध्यान और उसकी माददी ज़रूरतें पूरी करने पर नहीं टिकी है बल्कि इससे ऊपर उसकी सही तरबियत और फिक्री परवरिश है। बच्चों की तरबियत में बहुत से मसाएल की तरफ ध्यान ज़रूरी है। मसलन मियाँ-बीवी के ताल्लुकात इस तरह के होने चाहिए कि बच्चों पर उसका बुरा असर न पड़े। बच्चों के साथ मुहब्बत के मौक़े पर मुहब्बत व नवाज़िश से पेश आना चाहिए और डाँट-डपट के वक़्त डाँट-डपट की जानी चाहिए। हमेंशा उन्हें उनकी अपनी शख़्सियत का एहसास दिलाना चाहिए। ज़रूरी है कि दूसरों के सामने उनका एहतेराम ध्यान में रखें ताकि उनकी शख़्सियत में किसी तरह का झोल न आने पाए। और उनसे किसी वक़्त भी झूठी बातों का वादा न करें। बच्चों की सैर व तफरीह के लिए भी एक वक़्त तैय करें। और सबसे अहम चीज़ यह है कि बचपने ही से बच्चे को दीन के उसूल और मसाएल से आगाह करें। और यह सारी बातें

जनाबे ज़हरा (स0) के घर में बख़ूबी अन्जाम पा रही थीं। एक रिवायत में है कि जब फातिमा (स0) हसन को खिलाती और ऊपर उछालती थीं तो उस वक़्त उन्हें बहादुरी और बड़ाई का सबक भी देती जाती थीं, फरमाती थीं:

“ऐ हसन (अ0) अपने बाप जैसे बनो और हक़ की गर्दन से क़ैद के बंधन खोल दो और एहसान करने वाले खुदा की इबादत व परस्तिश करो और हरगिज़ कीना रखने वालों से दोस्ती न करो।” (बहारुल अनवार: जि-43 पे-286)

हज़रत फातिमा ज़हरा (स0) ज़िन्दगी के तमाम मौकों पर इस्लामी समाज की औरतों और मर्दों के लिए एक बेमिसाल नमूना हैं। आपने मर्दों को तक्वे और ईमान का सबक दिया है और औरतों को शौहर की ख़िदमद, बच्चों की सही तरबियत और इस्लामी पर्दे की रियायत का बेमिसाल सबक दिया है।

लेकिन यह निहायत अफसोसनाक

हकीक़त है कि जनाबे ज़हरा (स0) को उनकी तमाम अज़मत व बुजुर्गी की बावजूद और उनके बारे में पैग़म्बरे इस्लाम की सिफारिशात यानी:

फातिमा (स0) मेरा टुकड़ा है, जिसने इसे तकलीफ़ दी उसने मुझे तकलीफ़ दी और जिसने मुझे तकलीफ़ दी उसने खुदा को नाराज़ किया, के बावजूद उम्मत ने उनके हुक्म को भुला दिया और पैग़म्बर (स0) की वसियतों और नसीहतों को नज़र अन्दाज़ करके हुजूर की इकलौती बेटी को वहशियाना तकलीफ़ें देकर शहीद कर दिया और फातिमा (स0) ग़म व तकलीफ़ से लबरेज़ दिल और ज़ख्मों से चूर-चूर बदन के साथ अपने बुजुर्ग बाप की मुलाक़ात के लिए रवाना हुई ताकि अपने बाप से लोगों रवैय्ये की शिकायत करें और उन मुसीबतों और परेशानियों के बाद जन्नत में अपने बुजुर्ग बाप के साथ हमेशा की ज़िन्दगी बसर कर सकें। (सहीह मुस्लिम: जि-4 पे-103)



बक़िया.....मशोरे की अहमियत इस्लामी नुक़त-ए-नज़र से

इम्तियाज़ी निशान और उसकी लाज़मी खुसूसियत है। एक हदीस में इरशाद हुआ है कि जब तुमसे तुम्हारा कोई भाई मशोरा करे तो तुम उसको भली बात का मशोरा दो यानी मशोरे के इस इन्सानि हक़ के तामीरी अन्दाज़ को छोड़कर उसे किसी तरह के भी ख़राब अन्दाज़ के लिए इस्तेमाल न करो और जब मशोरे का काम अपनी सही और ठीक बुनियादों पर मुकम्मल हो जाए तो फिर पूरे भरोसे और यकीन और जज़्ब-ए-अमल के साथ उस

काम को अन्जाम दो और खुदा पर भरपूर भरोसा रखो। ग़र्ज़ अहलियत रखने वालों से मशोरा करना मुसलमानों की इस्लामी निशानी है और किसी को राए देना एक ऐसी अमानत को अदा करना है जिसमें किसी तरह भी धोके का देना किसी मुसलमान के लिए कभी जायज़ नहीं हो सकता। आपसी मशोरा और एक साथ, कारोबारी और समाजी बल्कि इन्सानि ज़िन्दगी के हर हिस्से में आपसी कामियाबी के लिए एक बड़ी बुनियाद और बहुत ही अहम ज़मानत और बड़ा मज़बूत रास्ता और सरमाया है।



“खुदा तुम लोगों की ज़िन्दगी आसान करना चाहता है।”

(सूर-ए-निसा)

इस्लाम में शादी के ऊँचे मक़सद

(पिछले शुमारे से आगे)

हुज्जतुल इस्लाम प्रो० हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु० र० आबिद

पाक घर

शादी के बग़ैर किसी जवान लड़की-लड़के का पाक चलन रहना मुम्किन मालूम नहीं होता। लाखों करोड़ों में जो गुनाहों से बचा हुआ पाक चलन वाला हो किसी एक बिन बियाहे या बिन बियाही का ढूँढना बहुत कठिन है। ऐसा कोई अल्लाह के औलिया (पहुँचे हुए, दोस्त, बड़ों अल्लाह वालों) में ही होगा। शादी के बिना गुनाहों, गन्दिगियों, अकड़, घमण्ड से बचे रहना हज़रत यूसुफ़ (अ०) का ही काम है। जिसके अन्दर सेक्स ज़िन्दा है और सेक्स का दबाव कड़ा है वह बुराई से बचा रह नहीं सकता।

यह शादी वह खुदाई और प्राकृतिक (कुदरती) सच्चाई है जो बहुत सी कठिनाइयों को आसान करती है और जवानों की पाकी, तक्वा और बेदाग़ चलन के बाकी रखने की वजह होती है। समाज में वही घर सलामत रह सकता है जिसमें मर्द-औरत शादी के तकाज़ों (माँगों) को पूरा करते हैं और एक-दूसरे के हक़ का लिहाज़ करते हैं। मुसलमान के घर को चाहे वह जिस देश में हो, सदा खुदा की याद और तस्बीह में रचा-बसा होना चाहिए और शरियत की चमक से जगमगाता रहना चाहिए। इस तरह उठान और ऊँचाई का नमूना होना चाहिए:

‘जिन घरों को ऊँचा रखने का खुदा ने हुक्म दिया है और यह कि उनमें उसका नाम लिया जाय और घरों में सुन्ह शाम उसकी तस्बीह की जाय।’

ऐसा घर मोमिन का घर है जिसमें खुदा की इबादत से और उसके कहे पर चलने से रौनक है, उसके हुक्म से शादी हुई है और उसमें ज़िन्दगी बिताने वाले औरत मर्द एक-दूसरे के हक़ को पूरा करते रहते हैं। कुर्आन मजीद शादी करने का हुक्म इसलिए देता है कि इस सुन्नत से मर्द औरत की कठिनाइयाँ कम हो जाएँ और दोनों के दामन, जो रहमत के और पालने के दमान हैं, वे गन्दिगियों और ख़राबियों से बचे रहें, मर्द-औरत एक रिश्ते में बंध जाने के बाद घर को खुदा की याद की जगह बना दे और उसकी तस्बीह करे। ऐसे ही घर के माहौल में मर्द औरत खुदा के सच्चे बन्दे (दास) और उनके बच्चे अच्छाईयों के नमूने और उनका चाल-चलन खुदाई अदब-तमीज़ (शिष्टाचार) और नबियों की सुन्नत (सदावृत्ति) का जलवा है।

जब मोमिन औरत-मर्द शादी करते हैं और उनमें हरेक खुदा के हुक्मों, आदेशों का लिहाज़ करने का खुद को ज़िम्मेवार समझता है,

दोनों एक दूसरे की मदद करने वाले साथी, दोस्त चाहने वाले, मेहरबान हमदर्द राज रखने वाले, प्यार मुहब्बत करने वाले के तरीके से ज़िन्दगी बिताते हैं तो वे कठिनाइयों से बचे रहते हैं। जब कोई मुश्किल सामने आती है तो मिलकर आसानी से दूर करने का रास्ता ढूँढ निकालते हैं और सब्र, सहन और हिम्मत से कठिनाइयाँ दूर करने को उठ खड़े होते हैं।

सबसे बुरे

अलग-थलग रहना, अकेलापन और शादी से कतराना बहुत सी परेशानियाँ, उदासी, मुरझाहट और मन की बेचैनियों का कारण है। इससे बहुत सी शारीरिक (जिस्मानी) और मानसिक (Psycho) बीमारियाँ पैदा होती हैं। अकेलापन आदमी को तरह-तरह के ख़याल, वहम, बेकार की सोच में और आचरण (चाल-चलन) व मनोवैज्ञानिक (Psychological) बीमारियों में डुबा देता है और आदमी के लिए कठिनाइयाँ खड़ी कर देता है। रसूल (स0) फरमाते हैं:

‘जहन्नमियों में ज़्यादा वे लोग होंगे जिन्होंने शादी न की होगी।’

आप (स0) का ही कहना है: ‘तुम्हारे मुर्दों में सबसे बुरे बे बियाहे हैं।’

एक रिवायत में आप (स0) की सूक्ति है: ‘तुम्हारे मुर्दों में सबसे नीच बे बियाहे हैं।’

आप (स0) का ही सूझ-बूझ वाला कथन है: ‘तुम में सबसे ज़्यादा बुरे (शरीर, दुष्ट) बेबियाहे लोग हैं। बेबियाहे शैतान के भाई हैं।’

प्यारे रसूल (स0) का कहना है: मेरी उम्मत (गिरोह, समुदाय, अनुयायी समाज) के

बेहतरीन (सबसे अच्छे, उत्तम) बियाहे लोग हैं और सबसे बुरे ख़राब लोग बिन बियाहे लोग हैं।

यह भी फरमाया: ‘जो लोग शादी किये बिन मर गये उन्हें दुनिया में लौटा दिया जाए तो वह ज़रूर बियाह करेंगे।’

एक और पाक हदीस (रसूल-वाणी) है: ‘खुदा उस पर लानत धिक्कार करता है जो शादी से कतराता है।’

बियाह न करने वालों को रसूल (स0) ने इसलिए जहन्नमी, सबसे बुरे, दुष्ट, शरीर, शैतान के भाई और धिक्कारी बताया है क्योंकि ये लोग ज़रूर ख़राबी, उथल-पुथल, शैतानी और गुनाह पाप करेंगे और घर व समाज के लिए कठिनाइयाँ पैदा करेंगे और इनकी वजह से ज़िन्दगी के लिए बहुत सी परेशानियाँ खड़ी हो जायेंगी।

कुर्आनी आयतों और रिवायतों के पढ़ने और तजुर्बे (अनुभव) से यह साबित होता है कि शादी से इन्सान को बड़ाई, ऊँचाई मिलती है और उन चीज़ों से छुटकारा मिलता है जो खुदा के अज़ाब (दण्ड) की वजह होती हैं, शादी गिरावट व नीच से और शैतान के चंगुल से बचाती है आदमी को बुराई, ख़राबी का सोता बनने नहीं देती, उसे खुदा की लानत का पात्र बनने से बचाती है। ये चीज़ें चैन आराम, पाकी, तक्वा और ज़िन्दगी की मुश्किलों को आसान करती है। जब यही वजह है कि कुर्आन मजीद में शादी की यह वजह बतायी गई है:

“खुदा तुम लोगों के लिए ज़िन्दगी को आसान करना चाहत है।”

(सूर-ए-निसा आयत-28)

(जारी)

इदारा

मुख्य समाचार

अमरीका दुनिया का सबसे नफरतआमेज मुल्क है:

आयतुल्लाहिल उज्मा सैय्यद अली खामेना-ई मददजिल्लहू

ईरान। ईरान के सुप्रीम मजहबी रहनुमा आयतुल्लाहिल उज्मा सैय्यद अली खामेना-ई मददजिल्लहू ने कहा कि अगर अमरीका ने ईरान पर हमला किया तो खाड़ी से तेल और गैस की सप्लाई रोक दी जा सकती है। रहबरे इंकेलाबे इस्लामी-ए-ईरान आयतुल्लाहिल उज्मा इमामे खुमैनी की बरसी के मौके पर कौम को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि अमरीका अगर ईरान मामले में कोई भी ग़लत क़दम उठाता है तो तवानाई के वसाएल की सप्लाई रोक दी जा सकती है। उन्होंने कहा कि ईरान ऐटमी ईंधन तैय्यार करने के हक़ से अलग न हटेगा। रहबरे मुअज़्ज़म का कहना है कि अमरीका और उसके इत्तेहादी तेली की सारी की सारी तन्सीबात की हिफाज़त करने के अहल नहीं हैं इसलिए अगर ईरान पर हमला किया गया तो तेहरान खाड़ी से तेल की सप्लाई मुकम्मल तौर पर बन्द कर सकता है। उन्होंने उन इल्ज़ामात को बेबुनियाद बताया कि ईरान ऐटम बम बनाने के लिये लगा हुआ है।

अपनी तक़रीर के दौरान अमरीका को ख़ास तौर

से निशाना बनाते हुए सुप्रीम लीडर ने कहा कि आप इन्सानी हुकूक और इन्तेहापसन्दी की मुख़ालेफ़त किस हैसियत से करते हैं। जब आपकी सरकार ग्वान्तानामोबे और अबुग़रीब जैसे हिरासती कैम्पों में कैदियों के साथ एक के बाद एक जुल्म ढा रही है। रहबरे मुअज़्ज़म ने अमरीका को दुनिया का सबसे ज़्यादा नफरत किये जाने वाला मुल्क भी क़रार दिया। ईरान के ख़िलाफ़ आलमी बिरादरी के एकजुट होने के दावे को अमरीका और उसके हिमायती मुल्क को झूठा प्रोपेगण्डा बताते हुए आयतुल्लाह सैय्यद अली ख़ामेना-ई ने कहा कि इस्लामी मुमालिक और तहरीक से न जुड़े हुए मिमबरों के अलावा दूसरे मुल्कों ने भी ईरान की हिमायत की है।

दूसरी तरफ़ ईरान के राष्ट्रपति डा० महमूद अहमदी नेजाद ने कहा कि न्युकिलियाई प्रोग्राम के मसले पर आलमी ताक़तों की तजवीज़ पर ईरान ग़ौर करेगा लेकिन न्युकिलियाई प्रोग्राम रुकने से मुताल्लिक तजवीज़ उसके लिए अभी क़बूल करने वाली नहीं है।

स्टुडेन्ट को इनामात देने से उनमें कोशिश की ताक़त पैदा होती है

जौनपुर। स्टुडेन्ट को इनामात देने से उनके हौसले बुलन्द होते हैं जिससे उनमें कोशिश करने की ताक़त पैदा होती है बग़ैर तालीम किसी मुल्क व मिल्लत की तरक्की नहीं हो सकती अगर हमें अपने मुल्क व मिल्लत को दुनिया में पहली सफ़ में लाना है तो तमाम तबक़े के लोगों को तालीमयाफ़ता होना पड़ेगा। यह बातें जामिआ इमामे जाफ़र सादिक (अ०) जौनपुर के हाल में इदार-ए-बनी हाशिम के ज़रिए ज़िला के प्रथम कामियाब होने वाले 365 स्टुडेन्ट को इनामात के तक़सीमी प्रोग्राम की सदारत करते हुए साबिक एम०एल०सी० सिराज मेहदी ने कहीं। दिल्ली से आए सीनियर सहाफी बाबर नक़वी ने कहा कि इस तरह बड़े पैमाने पर बच्चों की हौसला अफ़ज़ाई के लिए इनामात की तक़सीम करना बेशुमार फ़ाएदे पहुँचाने वाला है इससे बच्चों

में तालीम का शौक़ बढ़ेगा। आज तालीमी शौक़ की कमी होती जा रही है जिससे हमें तरक्की की जिस मन्ज़िल पर पहुँचना चाहिए हम वहाँ से बहुत पीछे हैं इसलिए हमें चाहिए कि इस तरह के तरक्की की राह को आसान करने वाले जल्से का एहतेमाम करें।

इस मौक़े पर इन्तिज़ार मेहदी 'बाबी', परवेज़ आलम, जावेद अन्सारी, मौलाना हसन मेहदी, मौलाना मो० मोहसिन, मौलाना गुलाम बाकिर और दीगर उलमा व दानिश्वरों ने शिरकत की।

जलसे की निज़ामत नैय्यर जलालपुरी ने की और जलसे के आख़िर में इदार-ए-बनी हाशिम जामिया इमामे जाफ़र सादिक (अ०) के सरबराह मौलाना सै० सफ़दर हुसैन ज़ैदी साहब ने आए हुए लोगों का शुक्रिया अदा किया।

मुसलमान मुत्तहिद होकर एक प्लेटफार्म पर आएँ: मौलाना कल्बे जवाद

लखनऊ, 4 जून। मुसलमानों के सियासी, समाजी और मज़हबी हुक्क की हिफाज़त के लिए बनायी गई पी0डी0एफ0 (प्युपिल्स डेमोक्रेटिक फ्रण्ट) के बैनर तले गाँधी भवन में इकट्ठा हुए रियासत के उलमा, खुतबा और दानिश्वरों ने मुसलमानों के सियासी, समाजी, कारोबारी और दूसरे मसाएल पर गौर किया। मौलाना मुफ्ती अबुल इरफान की सरपरस्ती में हुए इस जलसे में न सिर्फ इत्तेहादे बैनुलमुस्लिमीन बल्कि मुसलमानों की सियासी ताकत की ज़रूरत पर जोर दिया गया। इस मौके पर काएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद नक़वी साहब ने उलमा और दानिश्वरों पर मुशतमिल रियासती कौंसिल का एलान किया। चालीस अरकान की यह कौंसिल पी0डी0एफ0 की रहनुमाई करेगी। जलसे के दौरान जोहर की नमाज़ मौलाना अबुल इरफान की इमामत में पढ़ी गई जिसमें मौलाना कल्बे जवाद नक़वी समेत तमाम शीआ सुन्नी हज़रात शरीक हुए।

काएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद ने वहाँ मौजूद हज़ारों लोगों को ख़िताब करते हुए कहा कि हिन्दुस्तान को आज़ाद हुए 58 साल हो गए लेकिन मुसलमानों की हालत रोज़ बरोज़ बिगड़ती जा रही है बल्कि यूँ कहा जाए कि हिन्दुस्तान तो आज़ाद हो गया लेकिन सियासी ताकतों ने मुसलमानों को आज तक आज़ाद नहीं होने दिया। काएदे मिल्लत ने कहा कि 58 साल से मुसलमानों के हुक्क के लिए सियासी पार्टियों और मुस्लिम तनज़ीमों ने ख़ूब तक़रीरें कीं लेकिन अब

तक़रीरों की नहीं अमल की ज़रूरत है। उन्होंने कहा कि इत्तेहाद के बिना लोग ज़िन्दा तो रह सकते हैं लेकिन कौमें ज़िन्दा नहीं रह सकतीं। अगर हम ज़र्ज़ा-ज़र्ज़ा मिलकर इत्तेहाद की चट्टान बन जाएँ तो अपने ख़िलाफ चलने वाली हर हवा का रुख़ मोड़ सकते हैं। उन्होंने कहा कि मैंने उलमा और मुस्लिम तनज़ीमों को एक करने की कोशिश की उसी के नतीजे में पी0डी0एफ0 की तशकील हुई। मौलाना कल्बे जवाद साहब ने यह कहते हुए चेयरमैन का ओहदा छोड़ दिया कि ओहदे से कोई फायदा नहीं होता और काम करने वालों को आहदे की चाहत भी नहीं होती। यहाँ पर मुझ से ज़्यादा अहलियत वाले लोग मौजूद हैं इनमें से किसी को चेयरमैन बना लिया जाए। लेकिन वहाँ मौजूद सुनने वालों व स्टेज पर बैठे उलमा व दानिश्वरों ने उनको दोबारा चेयरमैन बना दिया।

इस मौके पर जमाते इस्लामी हिन्द के सिक्रेटरी मुजतबा फारूक, आल इण्डिया मुस्लिम फोरम के अध्यक्ष निहालुद्दीन अहमद, नेशनल लोकतंत्र पार्टी के अध्यक्ष अरशद ख़ान, गज़ियाबाद की जामा मस्जिद के इमाम के0ए0 बुख़ारी, ख़्वाजा वसीम, एम0ए0 हसीब, मौलाना गुलज़ार, मौलाना नुसरत हुसैन, मौलाना तहज़ीब हसन, मौलाना अब्दुररहमान, मौलाना सैय्यद सुलतान हुसैन, मोलाना अहमद कासमी के अलावा रियासत के और दूसरे हिस्सों से बड़ी तादाद में आए हुए उलमा, खुतबा और दानिश्वरों ने इस जलसे में हिस्सा लिया।

इमामे खुमैनी अलैहिर्रहमा की बरसी

लखनऊ 3 जून। 2 जून 2006 को बाद नमाज़ मग़रिब दारुस्सलामे हिन्द हुसैनिय-ए-हज़रत गुफ़रान माब अलैहिर्रहमा में इमामे खुमैनी (रह0) की बरसी के मौके पर नूरे हिदायत फाउण्डेशन के ज़ेरे एहतेमाम और काएदे मुअज़्ज़म की सरपरस्ती में एक सेमीनार मुनअकिद किया गया जिसमें तिलावते कलाम पाक के बाद शायरों और अदीबों ने इमामे खुमैनी (रह0) के इफ़कार व नज़रियात पर

नज़म न नसर में अपने ख़यालात का इज़हार फरमाया। आख़िर में ख़तीबे इंकिलाब मौलाना सैय्यद हसन ज़फ़र नक़वी इज्तेहादी (कराची) ने इंकिलाबअंगेज़ अन्दाज़ में सुनने वालों को ख़िताब फरमाया। मशहूर शायर जनाब डाक्टर रेहान आजमी भी पाकिस्तान से प्रोग्राम में शिरकत के लिए लखनऊ तशरीफ़ लाए जिन्होंने इमामे खुमैनी को अपने मख़सूस अन्दाज़ में ख़िराजे अक़ीदत पेश किया।